(v) अतः

बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध के आरंभिक जीवन के बारे मे काफी किंवदन्तियाँ है। उनका जन्म 566 ई० पू० या 563 ई० पू० में लुम्बिनी (आधुनिक रूम्मिनदेई) में हुआ। के कपिलवस्तु के शाक्य गणराज्य के राजकुमार थे। उनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम माहामाया था। उनके जन्म शाल वृक्ष के नीचे हुआ। जन्म लेने के साथ ही वे खड़े हो गए तथा सात कदम चले। फिर इन्होंने पहला वाक्य बोला ये मेरा अंतिम जन्म है, दुबारा मेरा जन्म नहीं होगा। उनके जन्म के सातवें दिन ही उनकी माता की मृत्यु हो गयी। उनका पालन पोषण उनकी मौसी तथा सौतेली माँ प्रजापति गौतमी ने किया। सिद्धार्थ शाक्य कुल तथा क्षत्रिय जाति के थे। उनका गोत्र गौतम था। इसलिए इन्हें गौतम भी कहा जाता था।

16 वर्ष की आयु में उनका विवाह यशोधरा नामक कन्या से हुआ जिससे राहुल नामक पुत्र हुआ। लेकिन सिद्धार्थ शुरू से ही मोक्ष पाने का मार्ग ढूँढ़ रहे थे। बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार इन्होंने चार दृश्य देखा जिसके अंतर्गत एक बूढ़ा, एक रोगी, एक लाश, तथा एक सन्यासी को देखा। चर्चा मिलती है कि उस समय वे अपने रथ पर सवार थे तथा उनके साथ इनका साथी चान था।

इन दृश्यों को देखकर सिद्धार्थ ने उसी सारथी से इन दृश्यों के बारे मे प्रश्न करना शुरू किया तथा उत्तर जानकर काफी दुखी हुए। लेकिन सिद्धार्थ को सन्यासी ने काफी आकृष्ट किया। इसलिए इन्होंने सन्यासी होने का निर्णय ले लिया।

अंततः सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग कर दिया तथा सत्य की खोज में निकल पड़े। बुद्ध का गृहत्याग **'महाभिनिष्क्रमण'** के नाम से जाना जाता है। पहले उनकी भेंट आलार कलाम से हुई। आलार कलाम ने उन्हें वेदांत दर्शन की शिक्षा दी। लेकिन सिद्धार्थ इससे भी संतुष्ट नहीं हुए। इसके बाद राजगृह में सिद्धार्थ की भेंट दूसरे गुरू रूद्रकरामपुत्र से हुई। रूद्रकरामपुत्र ने उन्हें योग विद्या का शिक्षा दिया। लेकिन सिद्धार्थ इससे भी संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने निर्ग्रन्थ परंपरा पर चलना शुरू किया यानि काया-क्लेश पर बल दिया। इन्होंने पाँच ब्राह्मण मित्रों के साथ मिलकर व्रत करना शुरू किया। लेकिन अंततः उन्हें काया-क्लेश भी निष्फल लगा। फिर उन्हें एक सुजाता नामक कन्या ने खीर खिलाया इससे उनके पाँच ब्राह्मण मित्रों ने उनका साथ छोड़ दिया।

इसके बाद बुद्ध मध्यम मार्ग को सर्वोत्तम मान कर घूमते रहे। अंत में गया में पीपल वृक्ष के नीचे उन्होंने समाधि ली। कुल मिलाकर सात सप्ताह यानि 49 दिनो तक उन्होंने समाधि लगाए रखा। 49 वें दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।

बौद्ध कथानक में मिलता है कि देवगणों ने उनके ध्यान को तोड़ने का प्रयास किया। इसी क्रम में मार नामक एक असुर ने माया के बल पर बुद्ध को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया। उसने बुद्ध के पास संदेश भेजा कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई है, उसके चचेरे भाई देवदत्त ने राजगद्दी पर कब्जा कर लिया है तथा उसकी पत्नी को भी देवदत्त ने हड़प लिया है। लेकिन जब बुद्ध इन बातों से विचलित नहीं हुए तो मार ने अपनी तीन पुत्रियों वासना, कामना, तथा आनंद को बुद्ध के पास भेजा। फिर बुद्ध के सामने मार ने भूकंप, जलप्लावन अग्निवर्षा आदि का दृश्य प्रस्तुत किया। लेकिन फिर भी बुद्ध विचलित नहीं हुए तथा अंततः उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। फिर इसके बाद बुद्ध से उनके ज्ञान प्राप्ति की गवाही माँगी गई। तब पृथ्वी ने इसकी गवाही दी। बौद्ध परंपरा में मान लिया गया कि बुद्ध ने गया में निर्वाण (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति कर ली।

ज्ञान प्राप्ति के कुछ दिनों के बाद तक वे सोचते रहे कि इस ज्ञान को फैलाया जाय या नहीं। फिर वे ऋषिपत्तन (सारनाथ) पहुँचे तथा वहाँ अपने उन्हीं पाँच ब्राह्मण मित्रों को अपना पहला शिष्य बनाया। इन ब्राह्मणों का नाम था– कौंडिन, अज्ज, अस्सजि, वप्प तथा भददीय बुद्ध ने **सारनाथ** मे ही अपना पहला उपदेश दिया जिसे **धर्मचक्रप्रवर्तन** के नाम से जाना जाता है। सारनाथ मे बुद्ध ने अपने प्रथम उपदेश में जो सिद्धांत रखा, वही बौद्ध धर्म का मुख्य सिद्धांत बना। इस प्रकार बौद्ध धर्म का जन्म सारनाथ में हुआ।

बुद्ध घूम-घूम कर जीवन भर धर्म का प्रचार करते रहे। उन्होंने उपदेश के लिए पालि भाषा का प्रयोग किया। वैशाली मगध तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश इनके धर्म प्रचार का मुख्य केन्द्र बना। समकालीन महान शासकों का इन्हें समर्थन तथा संरक्षण मिला।

बुद्ध वर्षा ऋतु में घूम-घूम कर धर्म का प्रचार नहीं करते थे वल्कि वर्षा ऋतु में विश्राम करते थे। उन्होंने प्रथम वर्षा ऋतु में सारनाथ मे विश्राम किया। उन्होंने सबसे ज्यादा वर्षा ऋतु श्रावस्ती में गुजारा तथा अपने-जीवन का अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताया। इसके बाद उन्होंने मल्ल जनपद की राजधानी पावा मे चुंद नामक शिष्य के यहाँ भोजन में संभवत: सूअर का माँस खा लिया। बौद्ध मान्यता के अनुसार इसे 'सुकरमदब' कहा गया है। ए० एल० वाशम इसका अर्थ सूअर का मांस लेते हैं।

चर्चा मिलती है कि खाने के साथ ही वे बीमार पड़ गए। फिर इन्होंने मल्ल की राजधानी कुशीनगर में **महापरिनिर्वाण** प्राप्त किया। निर्वाण इन्हें अपने जीवनकाल में ही मिल गया था। बुद्ध के काल का अंतिम अनुयायी जिसे बुद्ध ने ही अपने धर्म में प्रवेश करवाया, उनका नाम था शुभच्छ। इसे गौतम बुद्ध ने कुशीनगर में बौद्ध धर्म में प्रवेश करवाया था।

बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अस्थि कलश के लिए संघर्ष शुरू हुआ। फिर इसे आठ भागों में विभाजित कर उन आठों स्थलों पर स्तूप बनवाया गया जिसे अष्ट महास्थान कहा जाता है। ये अष्टमहास्थान हैं– राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, रामग्राम, अलकप्पा, वेठद्वीप, पावा तथा कुशीनगर। इसमें अलकप्पा तथा वेठद्वीप की पहचान स्पश्ष्ट नहीं है।

गौतम बुद्ध ने जीवन का अंतिम लक्ष्य यानि मोक्ष की प्राप्ति को माना हैं उनके अनुसार जीवन दुखों से भरा हुआ है। हर जगह दुख ही दुख है। इस दुख से मुक्त होने के लिए उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाने की सलाह दी। उन्होंने सारनाथ में जो उपदेश दिया, उसमे चार आर्य सत्य की बात की :

(i) दुख (ii) दुख का कारण

(iii) दुख का निवारण तथा (iv) दुख निवारण के मार्ग।

बुद्ध ने उसकी व्याख्या की कि संसार में जो दुख है, उसका कारण है तृष्णा तथा दुख का निवारण तभी होगा जब तृष्णा को समाप्त कर दिया जाए। इस तृष्णा से बचने के लिए जरूरी है कि **अष्टांगिक मार्ग** को अपनाया जाए। यही अष्टांगिक मार्ग मध्यम प्रतिपदा भी हैं जो निम्न है :

(i) सम्यक् दृष्टि, (ii) सम्यक् संकल्प,

(iii) सम्यक् वचन (vi) सम्यक् कर्म,

(v) सम्यक् आजीविका, (vi) सम्यक व्यायाम,

(vii) सम्यक् स्मृति, (viii) सम्यक् समधि,

इसके अलावा उन्होंने अन्य कई निर्देश दिये। जैसे-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि। उनके अनुसार सम्यक् समाधि के बाद एक ऐसी स्थिति आ जाएगी जब जीवित रहते हुए भी मानव मायावी बंधनों से मुक्त हो जाएगा। यही अवस्था निर्वाण की अवस्था होगी। बुद्ध ने पुनर्जनम के सिद्धांत को माना। बुद्ध के अनुसार पुनर्जन्म तृष्णा के कारण होता है। एक जीवन

सामान्यतः बौद्ध धर्म का सिद्धांत था जाति-प्रथा विरोधी तथा महिला समानतावादी। इसी वजह से महिलाएँ तथा शुद्र समुदाय बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुए। बुद्ध ने कृषि, व्यापार-वाणिज्य, पशुपालन, सूद-प्रथा सभी को स्वीकार किया। मार्क्सवादी विद्वानों के अनुसार, बुद्ध के पशु बलि विरोधी सिद्धांत उनके धार्मिक दर्शन नहीं है, बल्कि आर्थिक दर्शन है। इस प्रकार वे पशु-रक्षा पर बल दे रहे है। यही कारण है कि शूद्र समुदाय बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुए। वैसे बुद्ध के काल मे उनके सर्वाधिक भिक्षु ब्राह्मण थे। लेकिन अंततः बौद्ध तथा जैन धर्म को सबसे ज्यादा समर्थन वैश्य समुदाय ने दिया। बुद्ध अपने उपदेश में गरीबी को दुख का कारण तथा आलस्य का परिणाम बताते थे। उनके अनुसार यही गरीबी विभिन्न पापों को जन्म देती है।

बुद्ध के काल में बौद्ध धर्म के प्रचार का मुख्य नेतृत्व बुद्ध पर ही था। वे घूम-घूम कर धर्म का प्रचार करते थे। बुद्ध ने सबसे पहले पाँच ब्राह्मणों को शिष्य बनाया। बनारस में ही यश नामक एक धनाढ़य वैश्य कई लोगों के साथ बुद्ध का शिष्य बना। धनाढ़य वैश्य गहपति कहलाते थे। यश भी एक ऐसा ही गहपति था। श्रावस्ती के अनाथपिंडक ने कई बौद्ध बिहार बनवाए। मगध के शासक बिम्सिार ने बौद्ध धर्म को समर्थन दिया तथा उसने वेणुवन बुद्ध को दान में दिया। बिम्बिसार का पुत्र अजातशत्रु ने जब वैशाली पर विजय पाई तो रक्तपात से विचलित होकर वह बौद्ध उपासक हो गया। कौशाबी के राजा, कोशल के राजा प्रसेनजित बुद्ध के अनुयायी बताए गए हैं।

इस प्रकार जब बुद्ध को राजकीय परिवार से समर्थन मिलने लगा तो बुद्ध के काल में ही बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। इसी प्रकार बुद्ध के काल में ब्राह्मणों के बौद्ध संघ में प्रवेश से बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ी। लेकिन बुद्ध की मृत्यु के बाद मुख्य रूप से अशोक के काल में बौद्ध धर्म ने किसी भी ब्राह्मण धर्म की तुलना में बहुत ज्यादा ख्याति पाई हालाँकि रोमिला थापर के अनुसार बौद्ध धर्म का विकास नगरीय क्षेत्र में ही कायम था। अशोक का सबसे बड़ा योगदान था कि उसने इसे बाहर फैलाया। श्रीलंका, दक्षिण पूर्वी एशिया, अफगानिस्तान तक यह धर्म फैला। मध्य एशिया में इस्लाम धर्म के पहले के धर्म में ईसाई, यहूदी के साथ बौद्ध धर्म का नाम भी लिया जाता है। कनिष्क तथा मिनांडर ने इसे मध्य एशिया में फैलाने में काफी योगदान दिया। हालाँकि गुप्तकाल में इसके प्रचार में कमी आई। प्राचीन काल में बौद्ध धर्म को अंतिम ख्याति हर्षवर्धन के काल में मिला।

बुद्ध की मृत्यु के बाद 483 ई॰ पू॰ में राजगृह में एक बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष थे महाकश्यप जो गया के रहने वाले थे। इसी सम्मेलन में त्रिपिटक का संकलन किया गया जिसमें अभिधम्म पिटक अधूरा रह गया। इस सम्मेलन में लगभग 400 बौद्ध भिक्षु शामिल हुए।

दूसरा बौद्ध सम्मेलन 383 ई॰ पू॰ में वैशाली में हुआ। इस सम्मेलन से पहले ही बौद्ध भिक्षुओं में कुछ मतभेद उभरने लगे थे। बुद्ध ने सबसे पहले सारनाथ में मठ की स्थापना की थी। इस मठ में उन्होंने पहले स्वयं प्रवेश किया उसके बाद उन पाँच ब्राह्मण शिष्यों को प्रवेश करवाया। बौद्ध धर्म में बुद्ध के काल तक संघ में प्रवेश की आयु कम-से-कम 8 वर्ष थी। लेकिन बुद्ध की मृत्यु के बाद इसे 15 वर्ष कर दिया गया। बुद्ध के समय में भी 20 वर्ष की अवस्था के बाद ही संघ की पूर्ण सदस्यता दी जाती थी।

बुद्ध ने संघ की कार्य प्रणाली इस प्रकार रखी थी कि मतभेद होने पर बहुमत के द्वारा निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने मठीय नियम बनाया कि बौद्ध भिक्षु घूम-घूम कर धर्म का प्रचार करेंगे तथा भिक्षा माँगेंगे। लेकिन उनके जीवन काल से ही इसी मठीय अनुशासन को लेकर मतभेद उभरना शुरू हो गया बुद्ध का चचेरा भाई देवदत्त बौद्ध धर्म में शामिल हो गया। लेकिन इसके बाद उसने संघ के नियमों मे कमियाँ निकालना शुरू किया। एक बार देवदत्त ने कुछ अनुयायियों के साथ एक अलग संघ भी बनाया, लेकिन बाद में मिल गया।

वैशाली में ही पहला महिला संघ तथा प्रथम महिला मठ बना। वैशाली में पहली महिला भिक्षुणी बनी प्रजापति गोतमी। लेकिन वैशाली की पहली महिला भिक्षुणी थी नर्तकी आम्रपालि। आम्रपालि के संघ में प्रवेश की बात पर भी बौद्ध संघ में मतभेद उभरे। बौद्ध संघ का एक नियम था कि जब तक डाकू को राजा दंड से माफ न कर दे, तब तक वे संघ में प्रवेश नहीं कर सकते थे।

बुद्ध की मृत्यु के बाद प्रथम बौद्ध सम्मेलन में ही कुछ आपसी विवाद उभर गया। जिस कारण अभिधम्म पिटक का पूर्ण संकलन नहीं हो सका। लेकिन वैशाली के सम्मेलन में मठीय अनुशासन को लेकर मतभेद उभरा। विवाद इस बात पर था कि बहुत-से बौद्ध भिक्षु घूम-घूम कर धर्म प्रचार के पक्ष में नहीं थे, बल्कि वे मठ मे रह कर धर्म प्रचार पर बल दे रहे थे। इसी मुद्दे पर द्वितीय सम्मेलन में वैशाली में बौद्ध भिक्षु दो भागों में बँट गए। रूढ़िवादी भिक्षु यानि बुद्ध के कट्टर अनुयायी अर्थात् जिन लोगों ने घूम-घूम कर धर्म प्रचार पर बल दिया, वे स्थाविरावादी या थेरवादी कहलाए तथा जिन लोगों ने मठ मे रहकर धर्म प्रचार पर बल दिया वे महासंघिका कहलाए। लेकिन शुरूआत में महासंघिका का पक्ष कमजोर रहा। इसलिए अंततः वैशाली के सम्मेलन मे संघ का कोई स्पष्ट बँटवारा नहीं हुआ। द्वितीय बौद्ध सम्मेलन के समय मगध का शासक कालाशोक था। इस सम्मेलन का अध्यक्ष था सव्यकामी।

मौर्य काल में अशोक के समय 250 ई॰ पू॰ के लगभग तीसरा बौद्ध सम्मेलन हुआ। हालाँकि अशोक के अभिलेख में इसकी चर्चा नहीं है। यह सम्मेलन पाटलिपुत्र में हुआ। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे मोगलिपुत तिस्स। उन्हें उपगुप्त कहा जाता है जो अशोक के गुरू थे। इस सम्मेलन में भी बौद्ध संघ में मठीय अनुशासन संबंधी मतभेद उभरकर सामने आए। अंत में स्थाविरावादी सफल रहे। अशोक स्थाविरावादी था। अशोक ने घोषणा की कि जो भिक्षु संघ में मतभेद पैदा करेंगे उन्हें सफेद वस्त्र पहनाकर एकांत में रख दिया जाएगा। स्थाविरावादी ही चौंथें सम्मेलन में हीनयानी कहलाए।